

बेहद का वैराग्य - 12

अव्यक्त बापदादा :- (26. 01. 1995)

» _ » काम दिया था कि बेहद के वैराग्य वृत्ति पर स्वयं से भी चर्चा करो और आपस में भी चर्चा करो और **प्राैक्टिकल में इस साधना के बीज को प्रत्यक्ष करो।** तो किया? कि एक दिन सिर्फ डिबेट कर ली, वर्कशॉप तो हो गई लेकिन वर्क में नहीं आई। तो **वर्तमान समय के प्रमाण अभी अपनी सेवा वा सेवा-स्थानों की दिनचर्या बेहद के वैराग्य वृत्ति की बनाओ। अब कोई नवीनता दिखाओ।** नया वर्ष तो शुरू हो गया। बापदादा को आदि का बेहद वैराग्य सदा याद आता है। उसी समय का फल आप लोग हो।

» _ » अगर बेहद की वैराग्य वृत्ति नहीं होती तो स्थापना की वृद्धि इतनी नहीं हो सकती। **ब्रह्मा बाप ने अन्त तक बड़ी आयु होते हुए भी, तन का हिसाब चुकतू करते हुए भी बेहद के वैराग्य की स्थिति प्रत्यक्ष दिखाई। साधनों को स्व प्रति स्वीकार नहीं किया।** सेवा के प्रति अलग चीज़ है। स्व प्रति स्वीकार करना और सेवा प्रति कार्य में लगाना-अन्तर तो जानते हो ना? **स्व प्रति बेहद का वैराग्य हो, सेवा प्रति साधन को कार्य में लगाओ।** लेकिन साधन अलबेलापन नहीं लाये। तो ये **फालो फादर करना ही है ना कि जो और आने हैं उनको करना है? आप लोगों को करना है।**

>> आदि का बेहद वैराग्य

» _ » उसी समय का फल आप लोग हो

→ **आदि मे दादियो ने जो इतने साल से तपस्या की है उसका**

फल है

→ **उसी फाऊडेंशन पर ये इमारत है**

→ **जो आजतक यज्ञ चल रहा है और प्रयत्क्षता हो रही है**

» _ » दिनचर्या बेहद के वैराग्य वृत्ति की यानि जहां राग है

» _ » बेहद की वैराग्यवृत्ति और दिनचर्या के ऊपर पर दुनिया एक रिसर्च

→ साधारण मनुष्य के पास एक दिन मे 63000 शब्द दिमाग मे जाते है

→ हर 11 मिनट के बाद हमारा ध्यान भटकता है

→ एक नार्मल मनुष्य अपने फोन को ऐवरेज 110 बार देखता है

■ क्यूंकि उसको distruction पसंद है

→ क्यूं पसंद है क्योकि जब हमारा ध्यान इधर उधर जाता है

■ हमारे दिमाग मे एक कैमिकल रिलीज होता है

■ dopaming एक रासायनिक पदार्थ होता है

■ इसमे दो nerves के बीच मैसेंजर का काम करता है

→ उसमे हमे temporary खुशी का एहसास होता है

→ अभी इसी दुनिया मे है चाहे bk का लेबल लग गया

→ तो अपने को चेक करना है की कितना बार distruction होता

है?? ध्यान भटकता है

» _ » स्व प्रति बेहद का वैराग्य हो, सेवा प्रति साधन को कार्य में लगाओ

» _ » फालो फादर करना ही है

अव्यक्त बापदादा :- (03.04.1996)

» _ » समय समीप है तो समय की समीपता के अनुसार अब कौन सी लहर होनी चाहिए? (वैराग्य की) कौन सा वैराग्य - हद का या बेहद का? जितना सेवा का उमंग-उत्साह है, उतना समय की आवश्यकता प्रमाण स्व-स्थिति में बेहद का वैराग्य कहाँ तक है? क्योंकि आपके सेवा की सफलता है जल्दी से जल्दी प्रजा तैयार हो जाए। इसलिए सेवा करते हो ना? तो जब तक आप निमित्त आत्माओं में बेहद की वैराग्य वृत्ति नहीं है, तो अन्य आत्माओं में भी वैराग्य वृत्ति नहीं आ सकती और जब तक वैराग्य वृत्ति नहीं होगी तो जो चाहते हो कि बाप का परिचय सबको मिले, वह नहीं मिल सकता। बेहद का वैराग्य सदाकाल का वैराग्य है।

» _ » अगर समय प्रमाण वा सरकमस्टांश प्रमाण वैराग्य आता है तो समय नम्बरवन हो गया और आप नम्बर दो हो गये। परिस्थिति या समय ने वैराग्य दिलाया। परिस्थिति खत्म, समय पास हो गया तो वैराग्य पास हो गया। तो उसको क्या कहेंगे - बेहद का वैराग्य या हद का? तो अभी बेहद का वैराग्य चाहिए। अगर वैराग्य खण्डित हो जाता है तो उसका मुख्य कारण है - देह-भान। जब तक देह-भान का वैराग्य नहीं है तब तक कोई भी बात का वैराग्य सदाकाल नहीं होता है, अल्पकाल का होता है।

» _ » सम्बन्ध से वैराग्य - यह बड़ी बात नहीं है, वह तो दुनिया में भी कईयों को दिल से वैराग्य आ जाता है लेकिन यहाँ देह-भान के जो भिन्न-भिन्न रूप हैं, उन भिन्न-भिन्न रूपों को तो जानते हो ना? कितने देह-भान के रूप हैं, उसका विस्तार तो जानते हो लेकिन इस अनेक देह-भान के रूपों को जानकर, बेहद के वैराग्य में रहना। देह-भान, देही-अभिमान में बदल जाए। जैसे देह-भान एक नेचुरल हो गया, ऐसे देही-अभिमानी नेचुरल हो जाए क्योंकि हर बात में पहला शब्द देह ही आता है। चाहे सम्बन्ध है तो भी देह का ही सम्बन्ध है, पदार्थ हैं तो देह के पदार्थ हैं। तो मूल आधार देह-भान है। जब तक किसी भी रूप में देह-भान है तो वैराग्य वृत्ति नहीं हो सकती।

» _ » और बापदादा ने देखा कि वर्तमान समय जो देह-भान का विघ्न है। उसका कारण है कि देह के जो पुराने संस्कार हैं, उससे वैराग्य नहीं है। पहले देह के पुराने संस्कारों से वैराग्य चाहिए। संस्कार स्थिति से नीचे ले आते हैं। संस्कार के बेहद का वैराग्य कारण सेवा में वा सम्बन्ध-सम्पर्क में विघ्न पड़ते हैं। तो रिजल्ट में देखा कि देह के पुराने संस्कार से जब तक वैराग्य नहीं आया है, तब तक बेहद का वैराग्य सदा नहीं रहता।

» _ » संस्कार भिन्न-भिन्न रूप से अपने तरफ आकर्षित कर लेते हैं। तो जहाँ किसी भी तरफ आकर्षण है, वहाँ वैराग्य नहीं हो सकता। तो चेक करो कि मैं अपने पुराने वा व्यर्थ संस्कार से मुक्त हूँ? कितनी भी कोशिश करेंगे, करते भी

हैं। कि वैराग्य वृत्ति में रहें लेकिन संस्कार कोई-कोई के पास या मेजरिटी के पास किस न किस रूप में ऐसे प्रबल हैं जो अपनी तरफ खींचते हैं। तो पहले पुराने संस्कार से वैराग्य। संस्कार न चाहते भी इमर्ज हो जाते हैं क्यों? चाहते नहीं हो लेकिन सूक्ष्म में संस्कारों को भस्म नहीं किया है। कहाँ न कहाँ अंश मात्र रहे हुए हैं, छिपे हुए हैं वह समय पर न चाहते हुए भी इमर्ज हो जाते हैं। फिर कहते हैं - चाहते तो नहीं थे लेकिन क्या करें, हो गया, हो जाता है यह कौन बोलता है - देहभान या देही-अभिमान?

» _ » तो बापदादा ने देखा कि संस्कारों से वैराग्य वृत्ति में कमजोरी है। खत्म किया है लेकिन अंश भी नहीं हो, ऐसा खत्म नहीं किया है और जहाँ अंश है तो वंश तो होगा ही। आज अंश है, समय प्रमाण वंश का रूप ले लेता है। परवश कर देता है। कहने में तो सभी क्या कहते हैं कि जैसे बाप नॉलेजफुल है वैसे हम भी नॉलेजफुल हैं, लेकिन जब संस्कार का वार होता है तो नॉलेजफुल हैं या नॉलेज पुल हैं? क्या हैं? नॉलेजफुल के बजाए नॉलेज पुल बन जाते हो। उस समय किसी से भी पूछो तो कहेंगे - हाँ, समझती तो मैं भी हूँ, समझता तो मैं भी हूँ, होना नहीं चाहिए, करना नहीं चाहिए लेकिन हो जाता है। तो नॉलेजफुल हुए या नॉलेज पुल हुए? (नॉलेजपुल अर्थात् नॉलेज को खींचने वाले) जो नॉलेजफुल है उसे कोई भी संस्कार, सम्बन्ध, पदार्थ वार नहीं कर सकता।

» _ » अभी जो बापदादा ने समय दिया है, उसमें वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो क्योंकि सेवा की खींचातान में वैराग्यवृत्ति खत्म हो जाती है। वैसे सेवा में खुशी भी मिलती है, शक्ति भी मिलती है और प्रत्यक्षफल भी मिलता है लेकिन बेहद का वैराग्य खत्म भी सेवा में ही होता है। इसलिए अब अपने अन्दर इस वैराग्य वृत्ति को जगाओ। कल्प पहले भी बने तो आप ही थे कि और थे? आप ही हैं ना। सिर्फ मर्ज है, उसको इमर्ज करो। जैसे सेवा के प्लैन की प्रैक्टिकल में इमर्ज करते हो, तब सफलता मिलती है ना। ऐसे अभी बेहद के वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो। चाहे कितने भी साधन प्राप्त हैं और साधन तो आपको दिन प्रतिदिन ज्यादा ही मिलने हैं। लेकिन बेहद के वैराग्य वृत्ति की साधना मर्ज नहीं हो, इमर्ज हो।

» _ » साधन और साधना का बैलेन्स, क्योंकि आगे चलकर के प्रकृति आपकी दासी होगी। सत्कार मिलेगा, स्वमान मिलेगा। लेकिन सब कुछ होते वैराग्य वृत्ति कम नहीं हो। तो बेहद के वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल स्वयं में अनुभव करते हो कि सेवा में बिजी हो गये हो? जैसे दुनिया वालों को सेवा का प्रभाव दिखाई देता है ना! ऐसे बेहद के वैराग्य वृत्ति का प्रभाव दिखाई दे। आदि में आप सभी की स्थिति क्या थी? पाकिस्तान में जब थे, सेवा नहीं थी, साधन थे लेकिन बेहद के वैराग्यवृत्ति के वायुमण्डल ने सेवा को बढ़ाया। तो जो भी डायमण्ड जुबली वाले हैं उन्हीं में आदि संस्कार हैं, अब मर्ज हो गये हैं। अब फिर से इस वृत्ति को इमर्ज करो।

» _ » आदि रत्नों के बेहद के वैराग्य वृत्ति ने स्थापना की, अभी नई दुनिया की स्थापना के लिए फिर से वही वृत्ति, वही वायुमण्डल इमर्ज करो। तो सुना क्या ज़रूरत है? साधन, बेहद की वैराग्य वृत्ति को मर्ज नहीं करे। अभी विश्व अति में जा रही है तो अभी आवश्यकता है - सच्चे वैराग्य-वृत्ति की और वह वायुमण्डल बनाने वाले आप हो, पहले स्वयं में, फिर विश्व में। जो बापदादा कहते हैं, चाहते हैं सेकण्ड में अशरीरी हो जायें - उसका फाउण्डेशन यह बेहद की वैराग्य वृत्ति है, नहीं तो कितनी भी कोशिश करेंगे लेकिन सेकण्ड में नहीं हो सकेंगे। युद्ध में ही चले जायेंगे और जहाँ वैराग्य है तो ये वैराग्य है योग्य धरनी, उसमें जो भी डालो उसका फल फौरन निकलता। तो क्या करना है? सभी को फील हो कि बस हमको भी अभी वैराग्य वृत्ति में जाना है। अच्छा। समझा क्या करना है?

>> समय की समीपता के अनुसार अब कौन सी लहर होनी चाहिए?

» _ » वैराग्य की

→ हद का या बेहद का

■ बेहद का वैराग्य

» _ » बेहद का वैराग्य सदाकाल का वैराग्य है

» _ » वैराग्य खण्डित हो जाता है तो उसका मुख्य कारण क्या है ??

→ अटेंशन की कमी

→ समय को भूल जाते हैं

→ लक्ष्य को भूल जाते हैं

→ बुद्धि भटक जाती है

→ विस्मृति हो जाती है

→ मुख्य कारण है देहभान

» _ » अध्यात्मिकता का पहला प्रमाण है हम जागरूक हो जाते हैं

» _ » देहभान के भिन्न भिन्न

→ अपनापन

→ रूठना-रूसना

→ अहंकार

→ मान अपमान

→ मूड आफ

» _ » जब तक किसी भी रूप में देह-भान है तो वैराग्य वृत्ति नहीं हो सकती

» _ » देह-भान क्यों है ??

→ क्योंकि उसका कारण है देह के जो पुराने संस्कार हैं, उससे वैराग्य नहीं है

→ काम विकार शुभ भावना में परिवर्तित हो जाए

→ क्रोध रूहानी खुमारी में क्रोधाग्नि योग अग्नि में

→ लोभ अनासक्त वृत्ति ट्रस्टी में चाहिए चाहिए नहीं जाइए

→ मोह स्नेह में परिवर्तित हो जाए

→ अहंकार स्वाभिमान में परिवर्तित हो जाए

➤➤ बेहद की वैराग्यवृत्ति इमर्ज करना

➤ _ ➤ संस्कार न चाहते भी इमर्ज हो जाते हैं क्यों?

→ क्योंकि सूक्ष्म में संस्कारों को भस्म नहीं किया

➤ _ ➤ संस्कार का वार क्यूं होता है ??

→ जब नॉलेजफुल के बजाए नॉलेज पुल बन जाते हो

■ नॉलेजपुल अर्थात् नॉलेज को खींचने वाले

➤ _ ➤ जो नॉलेजफुल है उसे कोई भी संस्कार, सम्बन्ध, पदार्थ वार नहीं कर सकता

➤ _ ➤ वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो क्योंकि सेवा की खींचातान में वैराग्यवृत्ति खत्म हो जाती है

→ सेवा में खुशी भी मिलती है

→ शक्ति भी मिलती है

→ प्रत्यक्षफल भी मिलता है

→ बेहद का वैराग्य खत्म भी सेवा में ही होता है

➤ _ ➤ अभी नई दुनिया की स्थापना के लिए फिर से वही वृत्ति, वही वायुमण्डल इमर्ज करो

→ त्रेता द्वापर युग से जब गिरते हैं तो सारी पृथ्वी में पहले सारे महाद्वीप इकट्ठे थे फिर सब अलग अलग हो गए

→ मनुष्य soul conscious से body conscious हो गया

■ तो सारे अलग अलग हो गए

→ तो फिर से बदलाव तभी आयेगा जब soul consciousness होगी

→ यही स्मृति रहेगी कि हम आत्मा है

➤ _ ➤ सेकण्ड में अशरीरी हो जायें - उसका फाउण्डेशन है यह बेहद की वैराग्य वृत्ति
